खुशियों की बहार लाया दीपों का त्योहार

आने वाले समय में बहुत कुछ बदलने वाला है, लेकिन क्या बदलने वाला है? कैसे बदलेगा? इसके आधार क्या होंगे? इन चीज़ों को समझना आसान नहीं होगा, क्योंकि दीपावली सिर्फ एक त्यौहार नहीं, एक उत्सव

नहीं, बल्कि आने वाले समय की प्रत्यक्षता है। है ना यह एक मार्मिक बात! जिसमें कुछ ऐसे रहस्य छिपे हुए हैं, जिन्हें हमें समझने की ज़रूरत है।

अमावस्या की काली घनी रात को एक छोटे से दीपक की रोशनी से भगाते हैं सभी। लेकिन ये अमावस्या की रात का प्रसंग क्या उस दीपावली के दिन के लिए विशेष है? या इसकी कड़ी कहीं और से जुड़ी हुई है? साल में सिर्फ एक बार दीपक जलाते हैं और पूरे साल हम ऐसे ही बैठे रहते हैं। हर महीने कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष आता है। हर महीने शुक्ल पक्ष में तो आप दीपक नहीं जगाते! अब हम इसे थोड़ा समझने की कोशिश करते हैं।

दीपावली आने से पूर्व हम अपने घरों के कोने-कोने की सफाई करते हैं ना! ऐसी मान्यता है कि सफाई जहाँ होती है वहाँ लक्ष्मी का वास होता है। अब घर की सफाई का कनेक्शन धन से कैसे है? बहुत सारे लोग ऐसे हैं जिनके घरों में सफाई नहीं है, परन्तु उनके पास बहुत पैसा है। यहाँ घर को शरीर के साथ जोड़ सकते हैं और उसमें रहने वाले को आत्मा के साथ जोड़ सकते हैं। जैसे हमारे मन में उल्टे पुल्टे विचार या नकारात्मक विचार बैठे हैं तो वो हमारे शरीर रूपी घर में बीमारी पैदा करते हैं इसलिए सफाई का अर्थ ही यही है। अगर हम अपने मन को अन्दर से साफ करते हैं माना समझ जाते हैं, माना कॉन्शियस हो जाते हैं, तो इससे हमारा ज्ञान धन बढ़ जाता है और जिसके पास ज्ञान का धन है तो उसके पास स्थूल धन तो ऐसे ही आ जायेगा। अब इसमें आप कहोगे कि बहुत से लोग ऐसे हैं कि जिनके घर साफ सुथरे नहीं है, मन साफ नहीं है, उनके पास पैसा भी बहुत है। लेकिन ऐसा नहीं है, वो पैसा गलत तरीके से उनके पास आया है और वो कभी सुख नहीं दे सकता। आपको लगता है कि वो सुखी हैं, लेकिन हैं नहीं। पैसा वो अच्छा है जो पवित्र मन से कमाया गया है। ये तो हो गई मन की सफाई की बात, जहाँ मन का कोना-कोना साफ है वहाँ ज्ञान धन दौड़ कर आयेगा। कहते हैं एक बड़ी दीपावली आती है और एक छोटी दीपावली आती है। छोटी दीपावली से पहले नर्क चतुर्दशी होती है जिसमें एक दीपक जलाकर पूरे घर को दिखाकर, उसे घर से बाहर ले जाकर कूड़ेदान पर रख देते हैं। इसका भावार्थ यह है कि सबकुछ करने से पहले हम इस नारकीय जीवन को समझें, इसे थोड़ा-थोड़ा ज्ञान की रोशनी देकर सबको समझाने का प्रयास करें कि यह जीवन नारकीय है। तब जाके आप पूरी तरह से चमक पायेंगे या जगमगा पायेंगे।

वैसे भी दीपावली में, अर्थात् रामचन्द्र जी की रावण पर जीत पाकर आयोध्या लौटने पर विजय की खुशी में दीप जलाये गये। अब हम सभी राम तो हैं नहीं, और ना ही राम जैसा हमारा कोई कर्म है और ना ही हमने रावण को मारा है और ना ही हमने रावण को जीता है। तो हम किस आधार पर दीपावली मनायें! हम सभी त्यौहार और उत्सव कहकर इसे परम्परा का नाम देकर हर साल दीप जलाकर फिर भूल जाते हैं। अब राम और रावण की कहानी आज की स्थिति से मैच करती है। आज हर घर में रावण हैं। लेकिन रावण कहा किसे जाता है सबसे पहले ये हमारे लिए जानना आवश्यक है। तभी तो हम उस पर जीत पा सकेंगे। ये रावण कोई और नहीं, हमारे अन्दर विराजमान ये पाँच विकार ही (काम, क्रोध, लोभ, मोह,अहंकार) रावण हैं। तो जब हम अपने अंदर के रावण को मारेंगे तभी तो हमारे अन्दर ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। लेकिन उस रावण को मारने के लिए उसे पहचानना बहुत ज़रूरी है। हम सभी कर्म तो कर रहे हैं, लेकिन वो कर्म क्या रावण के अंदर बसे अहंकार के वश है या राम के अंदर बसे ज्ञान के वश है। ये आपको चेक करना पड़ेगा। राम का अर्थ ही है जो दिल को आराम दे। तो यहाँ राम भगवान का नाम है, ना कि राम भगवान हैं। तो परमात्मा का एक नाम राम है जो दीपराज है और हम आत्मायें परमात्मा के छोटे-छोटे दीपक हैं। हम दीपकों को परमात्मा राम के साथ मिलकर उन विकारों पर जीत पानी है। तभी दीपावली का सच्चा स्वरूप सार्थक होगा। इसी का यादगार रामचरित मानस में दिखाया गया है कि राम ने बंदरों की सेना तैयार की और रावण पर जीत प्राप्त की। आप सोचिये कि जो बंदर कभी एक जगह टिकते नहीं हैं तो उनकी सेना कैसे तैयार हुई होगी? तो हम आत्मायें ही आज विकार के वश हैं, और बंदरों की तरह ही मोह वश हैं। परमात्मा ही आकर हम सबका मन रूपी दरवाज़ा खोलते हैं और हमारे अंदर ज्ञान की रोशनी लाते हैं। उस ज्ञान की रोशनी से ही हम आत्मायें परमात्मा के साथ रहने को तैयार होती हैं। जब हम ये कर पायेंगे तब ही लंका पर विजय पायेंगे और तभी सच्ची दीपावली की सार्थकता होगी।

नेपाल-काठमाण्डू। माननीय प्रधानमंत्री खड्ग प्रसाद ओली को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राज दीदी। साथ हैं ब्र.कु. रामसिंह तथा अन्य।

जयपुर-वैशाली नगर। माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड भेंट करते हुए ब्र.कु. सुषमा तथा ब्र.कु. चन्द्रकला।

अरुणाचल प्रदेश-ईटानगर। माननीय मुख्यमंत्री पेमा खांडु को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

अमेठी-उ.प्र.। डी.एम. शकुन्तला गौतम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमित्रा। साथ हैं ब्र.कु. सुष्मा।

अरेराजधाम-बिहार। डी.एस.पी. अजय कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना। साथ हैं ब्र.कु. रिंकी।

दिल्ली-शक्तिनगर। नॉर्थ डी.एम.सी. डायरेक्टर रणवीर सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् पौधा भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. प्रीत।

कानपुर-उ.प्र.। उद्योग विकास राज्यमंत्री सतीश महाना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।

आरा-बिहार। जिला अधिकारी संजीव कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरण।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। आशीष कुमार सिंह,आई.पी.एस.,डी.आई.जी. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. माला।

दिल्ली-डेरावल नगर। म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन काउंसलर सीमा गुप्ता को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीत।

अमृतसर-पंजाब। म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन कमिश्नर सोनाली गिरी को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. परवीन।

फरीदाबाद-एन.आई.टी.। एम.सी.एफ. जवाइंट कमिश्नर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूजा।